बहारे
तहरीर
Part 11
Sabiya Virtual Publication

BAHAAR -E- TEHREER

PART 11 ROMAN URDU

ILMI, TEHQEEQI AUR ISLAHI TEHREERO PAR MUSHTAMIL EK GULDASTA

BY ABDE MUSTAFA OFFICIAL

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

Contents (CLICK TO JUMP)

एक मुजाहिद एक हज़ार काफ़िर 2
एक ख्वाब और नसीहतें 4
ख्वाब में भी जिहाद की वसीय्यत 6
पतली दुबली लड़कियाँ 7
जोरू का गुलाम बनने में फाइदा है 10
काली गोरी हर लड़की के पास वही चीज़ है 13
कुँवारा नहीं मरना 15
पाऊँ पर खड़े होने के बाद शादी करेंगे 16
पढ़ा लिखा गू खायेगा 18
ऐसे होते हैं मुरीद 19
काफ़िर के लिये दुआ करना 21
हज़रते फुज़ैल को एक लड़की से प्यार हुआ 24
जागने से बेहतर तू सोया रहता 26
वलीमा यानी एक लाख से ज़्यादा 27
निकाह आसान कैसे होगा 29
चंगेज़ खान का पोता और हज़रते शेख सादी 30
एक बीवी से फ़ाइदा क्या हुआ? 32
पहले नमाज फिर तावीज़ 33
औरत टेढ़ी पसली 34
लड़की वालों से एक सवाल 35
चलिए देख कर आते है दूल्हन को 37
चार बीवियाँ और हुक़ूक़ 38
ये बंदा दो आलम से खफा मेरे लिये है 40
हम 4 शादी पर कब तक लिखेंगे? 42

एक मुजाहिद एक हज़ार काफ़िर

कम से कम मुसलमानों को ऐसा नहीं सोचना चाहिये कि जंग तादाद या हथियारों की क़सरत से जीती जाती है, ये तो अल्लाह त'आला की तरफ से है कि अपने फज़्ल से ईमान वालों को फ़तह अ़ता फ़रमाता है, हाँ ये है कि लड़ने के लिये आगे बढ़ना होगा।

एक बार का वाक़िया है कि चंद सहाबा लकड़ियाँ जमा करने के लिये गये तो दुश्मनों ने पकड़ कर क़ैद कर लिया। फिर सवाल जवाब करने के बाद जंग का पैगाम दे कर छोड़ दिया, ये हरक़त हज़रते खालिद बिन वलीद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु पर सख्त ना गवार गुज़री। आप ने काफ़िरों को सबक़ सिखाने के लिये बारह लोगों को साथ लिया और दुश्मनों की फौज में शामिल हो गये, एक लश्कर जो क़िले में दाखिल होने वाला था उस में ये बारह मुजाहिदीन इस तरह शामिल हो गये कि किसी को मालूम ना हुआ।

जब वहाँ का हाक़िम फौज के इस्तिक़्बाल के लिये क़िले से निकल कर आगे आया और इतना क़रीब आ गया कि दस हाथ का फैसला रह गया तो ये बारह मुजाहिदीन आगे बढ़े और काफ़िर ने सोचा कि ये दस्ता मेरी ताज़ीम के लिये आगे आ रहा है, उस काफ़िर ने मरहबा कहते हुये कुफ्रिया कलिमात बकना शुरु किये कि हज़रते खालिद बिन वलीद कलिमा -ए- शहादत पढ़ते हुये शेर की तरह आगे बढ़े और उसे दबोच कर अपनी तलवार उस की गर्दन पर रख दी।

मुजाहिदीन ने जब तलवारें तान ली तो काफ़िर सत्ते में पड़ गये, उस काफ़िर हाक़िम को एक जगह क़ैद किया गया और फिर अकेले-अकेले का मुक़ाबिला शुरु हुआ, पहले हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ के बेटे हज़रते अ़ब्दुर रहमान निकले और और पाँच शहसवारों को जहन्नम रसीद कर दिया

फिर एक काफ़िर से मुक़ाबले में आप काफ़ी ज़ख्मी हो गये और मुजाहिदीन के पास वापस आये जहाँ वो काफ़िर हाक़िम क़ैद था, जब हज़रते खालिद बिन वलीद ने आप को ज़ख्मी देखा तो जलाल में आ गये और काफ़िर हाक़िम जो क़ैद में था उस की गर्दन उड़ा दी!

जब काफ़िरों को मालूम हुआ कि उन के हाक़िम की गर्दन उड़ा दी गयी है तो सब तिलमिला गये और हमले के लिये आगे बढ़े, हज़रते खालिद बिन वलीद ने एक सहाबी को हज़रते अ़ब्दुर रहमान की हिफाज़त पर मामूर किया और फक़त दस मुजाहिदीन आगे बढ़े, सामने दस हज़ार का लश्कर था पर इधर दस ईमान वाले थे। हज़रते खालिद बिन वलीद जिधर जाते लाशों के ढेर लग जाते, इसी तरह दूसरे मुजाहिदीन ने भी अपनी बहादुरी दिखाई और हज़ारों का लश्कर फक़त दस मुजाहिदीन से परेशान हो गया।

सुबह से लेकर दोपहर तक जंग जारी रही, मुजाहिदीन थक़ कर चूर हो चुके थे और इन्हें लगा कि अब शहादत का वक़्त क़रीब है कि अचानक हज़रते अबू उबैदा बिन ज़र्राह इस्लामी लश्कर ले कर मदद को पहुँच गये और काफ़िरों को भागने पर मजबूर कर दिया, वो बेचारे पहले से ही दस मुजाहिदीन से परेशान थे तो अब मज़ीद कैसे बर्दाश्त कर पाते।

(فیضان فاروق اعظم، ج2، ص565)

आप ने गौर किया होगा कि काफ़िरों ने मुसलमानों को पकड़ा फिर छोड़ दिया, इस पर हज़रते खालिद बिन वलीद ने काफ़िरों की खबर ले ली। पर आज काफ़िरों की तरफ से ज़ुल्म पर ज़ुल्म किया जा रहा है और हम जवाब देना तो दूर जवाब देने की सोचते तक नहीं।

अल्लाह त'आला हमें हमारी नस्लों को दीन पर क़ुरबान होने का जज़्बा अ़ता फ़रमाये, हमें दीन के लिये लड़ने की ताक़त अ़ता फ़रमाये।

एक ख्वाब और नसीहतें

एक जगह बारात में जाना हुआ। मैने रात वहीं गुज़ारी सुबह थोड़ा सवेरे घूमने फिरने के लिये निकला ताकि इलाक़े को देख सकूँ। मै इर्द-गिर्द देखता चला जा रहा था। नई-नई इमारतें, मुख्तलिफ़ क़िस्म के दरख्तों और लोगों में खो सा गया था। मुझे एक पल के लिये लगा कि बहुत आगे आ गया हूँ लेकिन फिर ये सोच कर चलता रहा कि ये रास्ता आगे किसी रास्ते से मिल जायेगा जहाँ से मै वापस हो जाऊँगा।

आखिर मै एक ऐसे मक़ाम से गुज़रा जहाँ कई कुत्ते एक दूसरे से थोड़ी दूरी पर सोये हुये थे। मुझे थोड़ा खौफ़ हुआ फ़िर आहिस्ता से आगे बढ़ने लगा लेकिन बजाये कोई रास्ता मिलने के मुझ पर रास्ता तंग हो रहा था। दीवारें ऊँची होती जा रही थी। फिर अचानक सामने देखा कि रास्ता बन्द है तो वापस होने के लिये मुड़ा और थोड़ा सा ही चला था कि एक के बाद एक कुत्ते पीछे पड़ गये। वो मुझे दौड़ाने लगे, मै भागने की पूरी कोशिश कर रहा था कि अचानक एक चीज़ मेरे सामने आई जो गालिबन इंसानी शक्ल में थी और उस ने कुत्तों को मारना शुरू कर दिया लेकिन वो कामयाब ना हो सका और वो कुत्ते फिर मेरे पीछे हो लिये।

भागते-भागते मेरा हाल बुरा हो चुका था और मै ये तमन्ना कर रहा था कि काश ये कोई ख्वाब हो कि एक बुज़ुर्ग अचानक ज़ाहिर हुये और उन की आमद से कुत्ते गाइब हो गये। मुझे सुकून मिला और फिर मै नीन्द से बेदार हो गया। मुझे इस ख्वाब की ताबीर तो नहीं पता अलबत्ता जो मैने समझा वो ये है कि :

वो रास्ता जिस पर मै चल पड़ा था वो दुनिया है। शुरू में मुझे अच्छा लगा पर जब खतरा महसूस हुआ तो बहुत देर हो चुकी थी। जब मैने वापसी की कोशिश की तो दुनिया कुत्ते की तरह मेरे पीछे पड़ गई और जो चीज़ पहले मुझे बचाने आई वो मेरे आमाल थे लेकिन उन आमाल में खुलूस

नहीं था, वो रियाकारी से भरे हुये थी और वो मुझे बचा नहीं पाये फिर जो बुज़ुर्ग मेरे सामने आये और मुझे बचाया वो औलिया में से थे।

इस में ये नसीहत भी है :

दुनिया ज़ाहिर में एक खूबसूरत रास्ता है पर इस की कोई मंज़िल नहीं है।

हमें देर होने से पहले लौट आना चाहिये।

नेक आमाल भी खुलूस के साथ ज़रूरी है वरना कोई फायदा नहीं है।

अल्लाह के नेक बन्दों की सोहबत बड़े काम की चीज़ है। जहाँ कोई काम नहीं आता वहाँ ये मदद करते हैं।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

ख्वाब में भी जिहाद की वसीय्यत

हज़रते अब्दुल्लाह बिन जाफ़रे तय्यार अपने वालिद के मज़ार की ज़ियारत के लिये हाज़िर हुये। आप के वालिद जंगे मोता में सना 8 हिजरी में रूमियों से जिहाद करते हुये शहीद हुये थे। अपने वालिद के मज़ार पर आप ने रात गुज़ारी और रात को ख्वाब में वालिदे मुहतरम की ज़ियारत हुई।

हज़रते अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैने देखा है कि वालिदे मुहतरम ने दो सब्ज़ रंग के हूल्ले पहन रखे हैं, आप के सर पर ताज है, आप के दो पर भी हैं और हाथ में एक तलवार है। आप ने मुझे तलवार देते हुये फ़रमाया :

ऐ बेटा! इस तलवार के साथ अपने दुश्मन को क़त्ल करो क्योंकि ये जो तुम मेरा मक़ाम देख रहे हो ये इसी जिहाद की बदौलत है।

(فتوح الشام، ذکر حدیث وقعۃ ابی القدس، ص94)

ये थे वालिदे मुहतरम जो वफ़ात के बाद भी ख्वाब में आकर जिहाद की तरगीब देते थे।

आज ना वालिद को और ना औलाद को जिहाद से कोई लेना देना है।

जिहाद हो ना हो ये अलग बात है लेकिन तैय्यारी कुछ भी नहीं है।

अगर आज इस क़द्र जिहाद के मौज़ू को एक तरफ ना किया जाता तो हालात शायद कुछ और होते।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

पतली दुबली लड़कियाँ

आज कल के लड़कों को पतली दुबली लड़की ज़्यादा पसंद है। लड़कियाँ भी खुद को पतला करने के चक्कर में और स्लिम फिट (Slim Fit) दिखने के लिये खाने वग़ैरह में परहेज़ करती हैं। कुछ अमीर घरों की लड़कियाँ इस के लिये जिम (Gym) का सहारा लेती हैं।

आप अगर हिन्दी जानते हैं तो आप ने एक लफ्ज़ सुना होगा "बुद्धि भ्रष्ट" यानी जिस की मत मारी गई हो। हमारे नौजवानों के साथ यही हुआ है कि फिल्मों, ड्रामों ने उन का दिमाग खराब कर दिया है। पतली दुबली लड़कियाँ पसंद करना और उन से शादी करना हमें नहीं लगता कि अच्छा है और हमें ऐसा इसलिये लगता है कि इस में फाइदा तो नहीं लेकिन नुक़सान ज़रूर है।

अल्लाह के रसूल, हमारे आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि ऐसी औरतों से शादी करो जो ज़्यादा बच्चे पैदा कर सके (यानी सिह्हत मन्द हो) और क़ियामत के दिन मै तुम्हारी तादाद की कसरत देख कर दीगर उम्मतों पर फख्र करूँगा। (ये हदीस का मफ़हूम है)

(دیکھیں مشکوٰۃ:3019،ابوداؤد:2050،نسائی:3229)

अब हमें चाहिये पतली कमर (माज़रत लेकिन यही हक़ीक़त है) फिर होता क्या है?

(1) बच्चे कम पैदा होते हैं और हम भी शायद "हम दो हमारे दो" चाहते हैं।

(2) लड़की कमज़ोर होने की वजह से शौहर की ख्वाहिशात और घर वालों की ज़रूरिय्यात को पूरा करने में परेशान हो जाती है फिर दूसरे निकाह का सिस्टम भी तो नहीं है।

(3) पहले बच्चे की पैदाइश में ही सी सेक्शन (Cesarean) का मुआमला पेश आ जाता है जिसे आप बड़ा ऑप्रेशन कहते हैं। इस में माँ पर तो असर पड़ता ही है साथ में बच्चे की सिह्हत और दिमाग पर भी असर पड़ता है। आज हर चार औरतों में एक की डिलेवरी में सी सेक्शन का इस्तिमाल होता है तो इस की एक वजह ये "पतली कमर" और "स्लिम फिट" का भूत भी है।

उस ऑप्रेशन के बाद तक़रीबन छह हफ्ते तक औरत का जिस्म अपनी पहली हालत में आने के लिये कोशिश करता है मगर फिर शौहर की ख्वाहिशात, घर के काम और अब तो माशा अल्लाह एक बच्चा भी आ चुका होता है जो अम्मी अम्मी करने के चक्कर में मार भी खा जाता है, ख़ैर उस बच्चे के लिए हम हमदर्दी का इज़हार करते हैं।

(4) लड़की के चेहरे की खूबसूरती पर इस दबाव का असर पड़ता है और बजाये शादी के बाद फूल की तरह खिलने के वो पैरों तले दब जाने वाली कली की तरह हो जाती है।

(5) सी सेक्शन के बाद संभलने से पहले उस की सिह्हत उसे ऐसी कमज़ोरी की तरफ ले जाती है जहाँ कई तरह की बीमारियाँ इसे जकड़ लेती हैं, जो मौत के साथ ही जाती हैं।

औरत सिह्हतमन्द होनी चाहिये। लगना चाहिये कि खाते पीते घराने से है। यहाँ तो लगता है कि पोलियो वाला मुआमला है। अच्छे घर की लड़कियाँ भी ऐसी लगती हैं जैसे भुकमरी का शिकार हैं। एक वो औरतें होती थी जी मैदाने जिहाद में मर्दों को उल्टे क़दम भागने पर मजबूर कर देती थी। औरतों का एक हाथ पड़ जाने पर ऐसा होना चाहिये कि कुछ सुनाई ना दे पर यहाँ हाल ये है कि औरत को मार दो तो मारने से पहले हॉस्पिटल में बिस्तर लगवा कर रखना होगा। अल्लाह रहम करे।

आप भी शादी करें तो सिह्हतमन्द औरतों से करें। अगर पतली दुबली से कर ली है तो उसे सिह्हत मन्द बनाये। ये "स्लिम फिट" का नाटक बन्द करें।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

जोरू का गुलाम बनने में फाइदा है

जोरू यानी बीवी का गुलाम किसे कहते हैं?

अगर बीवी की इज़्ज़त करना, उस के साथ घर का काम करना, उस से अच्छी तरह पेश आना, उस की डाँट या कड़वी बातों को खामोशी से सुन लेने का नाम गुलामी है तो यक़ीन करें बीवी का गुलाम बनने में ही फाइदा है।

मेरी बातों से हो सकता है कि आप की मर्दानगी को तकलीफ़ पहुँचे लेकिन हक़ीक़त यही है।

बीवी की इज़्ज़त करेंगे तो वो आप को भी इज़्ज़त देगी, अगर साथ में घर का काम करते हैं तो उस में कोई बुराई नहीं क्योंकि नबी -ए- करीम ﷺ भी घर के कामों में मदद फ़रमाते थे, अब रहा बीवी की चार बातें सुनना तो इस में भी हर्ज क्या है?

हज़रते शैख अबुल हसन खिरक़ानी रहमतुल्लाह अ़लैह की बीवी उन के लिये सख्त अल्फाज़ इस्तिमाल किया करती थी पर आप सब्र करते थे। एक शख्स आप के घर गया और आप की बीवी से पूछा कि शैख साहिब कहाँ हैं तो बीवी ने कहा कि तुम उसे शैख कहते हो, वो जाहिल और झूटा है! शैख का तो नहीं पता लेकिन मेरा शौहर जंगल की तरफ़ गया है। वो शख्स जब जंगल की तरफ़ गया तो देखा कि आप रहमतुल्लाह अ़लैह शेर पर लकड़ियाँ लादे तशरीफ़ ला रहे हैं।

उस शख्स ने बीवी के सख्त रवय्ये के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया कि अगर मै बीवी का बोझ बरदाश्त ना करता तो ये शेर मेरा बोझ कैसे उठाता (यानी मै अल्लाह की रज़ा के लिये बीवी की ज़ुबान दराज़ी पर सब्र करता हूँ तो अल्लाह त'आला ने इस शेर को मेरा इताअ़त गुज़ार बना दिया है।)

(تذکرۃ الاولیاء، جز2، ص174)

एक शख़्स हज़रते उमर रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु के पास अपनी बीवी की शिकायत करने के लिये आया लेकिन जब दरवाज़े पर पहुँचा तो हज़रते उमर फारूक़ की बीवी हज़रते उम्मे कुलसुम की बुलंद आवाज़ सुनाई दी, वो हज़रते उमर फारूक़ पर (गुस्से की हालत में) बरस रही थीं। उस शख़्स ने सोचा कि मै क्या शिकायत करूँ यहाँ तो हज़रते उमर फारूक़ भी इसी मसअले से दो चार हैं और वो वापस हो लिया।

हज़रते उमर फारूक़ ने उस शख़्स को बाद में बुलाया और पूछा तो उस ने बताया कि बीवी की शिकायत ले कर आया था मगर आप की मुहतरमा.......

हज़रते उमर फारूक़ ने फ़रमाया: मुझ पर मेरी बीवी के कुछ हुक़ूक़ हैं जिन की वजह से मै दरगुज़र करता हूँ। वो मझे जहन्नम की आग से बचाने का ज़रिया है, उस की वजह से मेरा दिल हराम की ख़्वाहिश से बचा रहता है, जब मै घर से बाहर होता हूँ तो वो मेंरे माल की हिफाज़त करती है।

मेंरे कपड़े धोती है, मेंरे बच्चों की परवरिश करती है, मेंरे लिये खाना पकाती है।

ये सुन कर उस शख़्स को अहसास हुआ कि ये फाइदे तो मुझे भी अपनी बीवी से हासिल होते हैं लेकिन अफ़सोस कि मैने इन बातों को मद्दे नज़र रखते हुये उस की कोताहियों और कमियों को नज़र अन्दाज़ नहीं किया। फिर उस शख़्स ने भी उस दिन से दरगुज़र से काम लेने की निय्यत कर ली।

(تنبیہ الغافلین، ص280، بہ حوالہ اسلامی شادی)

बीवी अगर चार बातें गुस्से में कह दे तो थोड़ा बरदाश्त कर लें, आप का क्या जायेगा? फिर जब उसे अहसास होगा तो हो सकता है आप से मुआफ़ी माँग ले। आप दरगुज़र से काम लें और अगर ये गुलामी कहलाती है तो यही सहीह, बीवी का गुलाम बन के रहने में फाइदा है।

उस की गलती, उस की कोताही को देख कर फौरन गुस्सा हो जाना और अपनी मर्दानगी दिखाने के चक्कर में अपनी जिहालत दिखाना सहीह नहीं है। ये देखें कि उस ने आप के लिये कितनी क़ुरबानियाँ दी हैं। वो आप से कितना प्यार करती है। क्या ऐसा मुमकिन है कि बे-ऐब बीवी मिल जाये? अगर नहीं तो फिर दरगुज़र से काम लेने में ही फाइदा है यानी जोरू का गुलाम बनने में ही फाइदा है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

काली गोरी हर लड़की के पास वही चीज़ है

इन अलफाज़ को गलत ना समझें। ये बात बिल्कुल दुरुस्त है कि लड़की चाहे काली हो या गोरी सब के पास एक जैसी चीज़ है। ये हमारी समझ का फेर है कि हम गोरी को अच्छा समझते, पसंद करते हैं और काली को बुरा समझते हैं, नापसंद करते हैं।

अगर मेरे अलफाज़ गलत लगते हैं तो ये हदीस पढ़ लें :

नबी -ए- करीम ने इरशाद फरमाया कि जो मर्द किसी औरत को देख ले और वो उसे भली मालूम हो तो वो अपनी बीवी के पास आ जाये (अपनी हाजत पूरी कर ले) और उस (की बीवी) के पास भी वही है जो उस औरत के पास है।

(مشکوٰۃ:3108، دارمی:2252، اسی طرح کی حدیث ابوداؤد، ترمذی، ابن حبان، نسائی کبری، سنن بیہقی، مسند عبد بن حمید میں بھی ہے)

मिरकात में है कि जब किसी औरत पर नज़र पढ़ जाये (और वो अच्छी लगे) तो फौरन घर वाली के पास आयें और उस से जिमा करें ताकि जिन्सी तस्कीन हो जाये और खयालात खतम हो जायें। इस लिये कि उस के पास भी उसी तरह की शर्मगाह है जो इस के पास है।

(مرقاۃ المفاتیح، ج6، ص45)

अल्लामा मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहीमहुल्लाह लिखते हैं :

सुब्हान अल्लाह! कैसे नफ़ीस तरीक़े से समझाया कि लज़्ज़ते जिमा तो अपनी क़ुव्वत पर मब्नी है। जिस तरह मनी गलीज़ होगी और मर्द में ताक़त ज़्यादा होगी उसी क़द्र लज़्ज़त महसूस होगी। जो लज़्ज़त उस देखी

हुई औरत से सोहबत करने में होती हो वो अपनी बीवी से सोहबत करने में है फिर हरामकारी से मुँह काला क्यों करते हो?

(مرآۃ المناجیح، ج5، ص29)

कितने वाज़ेह अलफाज़ में समझाया गया है मगर गोरे रंग के दीवानों को समझ में नहीं आती।

कई बार निकाह के लिये लड़का या लड़के वाले इसलिये इन्कार कर देते हैं कि लड़की का रंग गोरा नहीं है। क्या हम उस दीन के मानने वाले नहीं जिस में गोरे को काले पर कोई फज़ीलत हासिल नहीं फिर हम ऐसा क्यों करते हैं।

ये सोचना गलत है कि काली लड़की से जिमा करने पर लज़्ज़त नहीं मिलेगी। ये हमने सोच बना रखी है। लज़्ज़त का ताल्लुक़ तो अपने जिस्म से है। अगर खुद में कमी है तो चाहे गोरी हो या काली, लज़्ज़त में फर्क़ नहीं पड़ने वाला। हमें बस सोच बदलने की ज़रूरत है। काश ये बात हर लड़के की समझ में आ जाये और किसी लड़की को अपने रंग की वजह से मायूस ना होना पड़े।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

कुँवारा नहीं मरना

कुँवारा मरना अच्छी बात नहीं है। हमारे बुज़ुर्गों ने ये नहीं सिखाया।

हज़रते इब्ने मसऊद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फ़रमाते थे अगर मेरी उम्र में से सिर्फ़ दस दिन बाक़ी रह गये हों और उन के बाद मेरी मौत हो तो मे चाहूँगा कि निकाह कर लूँ और अल्लाह त'आला से इस हालत में मुलाक़ात ना हो कि मै कुँवारा रहूँ।

(قوت القلوب، ج2، ص827)

इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अ़लैह के मुतल्लिक़ बयान किया जाता है कि आप की बीवी का इंतिक़ाल हुआ तो अगले ही दिन आप ने निकाह कर लिया।

हज़रते बिश्र रहमतुल्लाह अ़लैह का इंतिक़ाल हुआ तो किसी ने आप को ख्वाब में देखा। आप ने फ़रमाया कि मुझे ये मक़ाम अ़ता किया गया लेकिन शादी शुदा लोगों के मक़ाम तक ना पहुँच सका। (उन को अहलो अयाल पर सब्र करने की वजह से एक खास मक़ाम हासिल हुआ।)

हज़रते म'आज़ बिन जबल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की बीवी (ताऊन की वजह से) इंतिक़ाल फ़रमा गई तो आप ने फ़रमाया कि मेरा निकाह कर दो, मै नहीं चाहता कि अल्लाह त'आला से इस हालत में मिलूँ कि मै कुँवारा रहूँ।

(ایضاً)

कुँवारे समाज को चाहिये कि इस समाज को छोड़ कर शादी शुदा समाज में दाखिला ले लें। कुँवारे से ज़्यादा शादी शुदा की फज़ीलत हैं। मुख्तसर ये कि जल्दी-जल्दी शादी कीजिये। कब तक कुँवारों की तंज़ीम के मेम्बर बने रहेंगे?

पाऊँ पर खड़े होने के बाद शादी करेंगे

यही कहते हैं हम कि पहले पाऊँ पर खड़े हो जायें फिर शादी करेंगे। अब पाऊँ पर खड़े कब होंगे ये हमें भी पता नहीं होता। पढ़ने के लिये जा रहे कुछ लड़कों को देख कर लगता है कि ये कम से कम दो तीन बच्चों के बाप होंगे लेकिन मालूम करने पर कुँवारे निकलते हैं। फिर पूछने पर कहते हैं कि अपने पाऊँ पर खड़े हो जायें फिर.....

नर्सरी से मेट्रिक, फिर इंटर, बेचलर, मास्टर, डॉक्टर, इंजीनियर वग़ैरह के मक़ाम तक पहुँचते-पहुँचते एक तिहाई उम्र मुकम्मल हो जाती है फिर बारी आती है नौकरी की जिस में आज कल अच्छा खासा वक़्त लग जाता है। अगर नौकरी ना कर के अपना बिज़निस करे तो उसे जमाने के लिये काफ़ी वक़्त देना पड़ता है। इस तरह तक़रीबन आधी ज़िंदगी पार हो जाती है। उस के बाद जब लगता है कि एक पाऊँ पर तो खड़े हो ही गये हैं फिर शादी की निय्यत की जाती है। शादी के वक़्त ऐसा भी देखा गया है कि लड़का, लड़के का वालिद नज़र आता है।

क्या शादी के बाद पाऊँ पर खड़े नहीं हो सकते? बिल्कुल हो सकते हैं। शादी को रुकावट समझना सही नहीं है बल्कि शादी के बाद कामियाबी के इम्कानात ज़्यादा होते हैं। घर में ऐसा होता ही है कि कई लोगों का आना जाना, खाना पीना लगा रहता है फिर एक औरत के आने से क्या भूका रहने की हालत हो जायेगी। अब बात आती है कि खर्चे की तो फिज़ूल खर्चे को ज़रूरी समझना आप की गलती है।

जिस उम्र में आज कल अक्सर लड़के शादी करते हैं, इतनी उम्र में तो चार शादियाँ हो जानी चाहियें जितना पैसा जमा कर के शादी करते हैं उतने में चार बीवियों का नहीं तो कम से कम दो बीवियों का खर्च ज़रूर उठाया जा सकता है।

एक वो लोग हुआ करते थे जो इक्कीस साल की उम्र में क़ुस्तुंतुनिया की दीवारें गिरा कर आगे बढ़ जाते थे और एक हम हैं कि इस उम्र को खेलने कूदने, अंग्रेज़ी पढ़ने और मौज़ मस्ती करने की उम्र समझते हैं।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

पढ़ा लिखा गू खायेगा

ये जुमला मशहूर है और शायद आपने भी सुना होगा कि लोग कहते हुये नज़र आते हैं कि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि पढ़ा लिखा गू खायेगा और कुछ लोग इस पर एक रिवायत तक बयान करते हैं कि सहाबा ने देखा कि एक परिन्दा है जिस के परों पर कलिमा लिखा हुआ है और वो गन्दगी खा रहा है और फिर हुज़ूर ﷺ ने देखा तो इरशाद फ़रमाया कि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि पढ़े लिखे लोग गन्दे कामों में मुब्तिला हो जायेंगे और उलमा गैर शरई हरकतें करेंगे, ये उसी की तरफ इशारा है (ये मफहूम है जो हमने बयान किया)

इस रिवायत के बारे में मुफ्ती मुहम्मद नियाज़ बरकाती मिस्बाही हाफिज़हुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि तलाशे बिस्यार के बावजूद ऐसी कोई रिवायत नहीं मिली और ये मौज़ू मालूम होती है (यानी ऐसी हदीस नहीं है) और हदीसें गढना हरामे क़तई और गुनाहे कबीरा है।

(ملتقطاً: فتاوی مرکز تربیت افتا، ج2، ص513)

जो लोग ऐसी रिवायत बयान करते हैं और फिर इसे बुनियाद बना कर उलमा की तौहीन करते हुये कहते हैं कि ये पढ़े लिखे गू खाते हैं, उन्हें चाहिये कि इस रिवायत का हवाला पेश करें और अगर ना कर सकें तो सुनी सुनाई बात बयान करने से तौबा करें और इसे हदीस बताने वालों पर लाज़िम है कि इस की सनद और इबारत पेश करें वरना हुज़ूर ﷺ पर झूट बांध कर जहन्नम में अपना ठिकाना ना बनायें।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

ऐसे होते हैं मुरीद

हज़रते सैयि्दुना मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहीमहुल्लाल त'आला लिखते हैं कि मै सिकन्दराबाद की मस्जिद में था।

एक क़लन्दर वहाँ नमाज़ पढ़ रहा था।

उस के पास दो बगैर सिले हुये तहबंद थे जिन में से एक को नीचे बांध कर सित्र पोशी कर रखी थी और एक को चार तहबंद मोड़ कर ज़मीन पर बिछा कर उस पर नमाज़ पढ़ रहा था।

सर पर टोपी और दस्तार थी मगर बाक़ी बदन बरहना (खुला हुआ) था।

एक तालिबे इल्म उस से सख्ती से उलझ पड़ा और कहने लगा कि ये गुमराह, सख्त दिल और जाहिल अपने जिस्म को खुला छोड़ कर अपने पैरों के नीचे कपड़े को बिछाये नमाज़ पढ़ रहा है, ये कितनी बे-अदबी की बात है।

ये सुन कर क़लन्दर ने वो तहबंद उठायी और अपने गले में डाल कर जिस्म को छुपाया और फिर नमाज़ में मशरुफ़ हो गया और उस पर कोई तब्दीली ज़ाहिर नहीं हुई।

उस तालिबे इल्म को महसूस हुआ कि मैने गलती की और सख्त अल्फाज़ इस्तिमाल किये हैं वो नमाज़ के बाद क़लन्दर से मुआफ़ी माँगने आया और कहने लगा कि मैने आपसे गैर मुनासिब बातें की है, मुझे माफ़ फ़रमा दीजिये।

उस क़लन्दर ने जवाब दिया कि ए गरीब नौजवान! बातों से वो दिल बिगाड़े जो किसी पीर का परवरिश किया हुआ ना हो, तुमने मुझे नसीहत की और शरई मस'अला बताया, अल्लाह त'आला तुम्हें बहुत जज़ा दे।

(سبع سنابل، ص68)

आज हमे सख्ती के साथ तो दूर, कोई हज़रत हज़रत कह कर ताज़ीम के साथ भी मस'अला बता दे तो हमें ऐसा लगता है कि हमारी तौहीन कर दी गयी है और हम फौरन अकड़ में आ जाते हैं और सामने वाले को जाहिल साबित करने और खुद को अहले इल्म साबित करने की हर मुम्किन कोशिश में लग जाते हैं। अल्लाह त'आला हमें अपने ऐबों पर नज़र करने और हक़ को तस्लीम करने की तौफ़ीक़ अता फरमाये।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

काफ़िर के लिये दुआ करना

काफ़िर के लिये मग़फ़िरत और बख़्शिश की दुआ हरगिज़ नहीं कर सकते।

हिदायत के लिये दुआ करने में हर्ज नहीं।

फ़तावा आलमगीरी में है कि :

ولا يدعو للذمی بالمغفرة ولو دعاله بالهدی جاز لانه عليه السلام قال اللهم اهدی قومی فانهم لا يعلمون كذا فی التبيين

"काफ़िर के लिये मग़फ़िरत की दुआ हरगिज़ हरगिज़ ना करें, हिदायत की दुआ करना जाइज़ है कि नबी -ए- करीम ﷺ ने ख़ुद को काफ़िरों की हिदायत के लिये दुआ फरमायी कि ऐ अल्लाह इन को हिदायत दे जो नहीं जानते।

(فتاوی عالمگیری، کتاب الکراھیۃ، ج5، ص348)

हज़रते तुफैल बिन अम्र ने अपनी क़ौम की शिकायत करने के बाद हुज़ूर ﷺ से अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह उनके खिलाफ़ दुआ कीजिये तो नबी -ए- रहमत ने हिदायत की दुआ फरमायी।

(صحیح بخاری، کتاب الجھاد، ج2، ص291، حدیث2937)

इसी तरह सहाबा ने क़बीला -ए- सक़ीफ के खिलाफ़ दुआ करने की गुज़ारिश की तो आप ﷺ ने उन के लिये हिदायत की दुआ फरमायी।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، ج5، ص492، حدیث3968)

साबित हुआ कि हिदायत की दुआ करने में हर्ज नहीं और जो मर जायें उन के लिये तो हिदायत की दुआ नहीं हो सकती लिहाज़ा मग़फ़िरत की दुआ करना जाइज़ नहीं है बल्कि सख़्त नाजाइज़ व हराम है बल्कि बाज़ सूरतों में कुफ्र भी है। लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि इस से परहेज़ करें।

आज कल कुछ मुसलमान काफ़िरों के मरने के बाद उन के नाम के साथ RIP लिखते हैं, ये भी नाजाइज़ है और बचना ज़रूरी है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा
अपना काम बनता .... में जाये जनता

हज़रते सिर्री सक़्ती रहीमहुल्लाहु त'आला ने एक बार अल्हम्दु लिल्लाह कहा तो 30 साल तक अस्तगफार करते रहे!

किसी ने पूछा कि ऐसा क्यों? आप ने फरमाया कि एक मर्तबा एक शख़्स मेरे पास आया और कहा कि बगदाद में आग लग गयी है जिस से मकानात वग़ैरह जल गये हैं लेकिन आप की दुकान बच गयी है तो मैने इस पर अल्हम्दु लिल्लाह कह दिया और इस पर नादिम हूँ कि मैने मुसलमानों के नुक़सान को नज़र अंदाज़ कर के अपने फाइदे को देख कर अल्हम्दु लिल्लाह कहा।

इसी वजह से मैं 30 साल से अस्तगफार कर रहा हूँ!

(رسالہ قشیریہ، اردو، ص74)

आज कल हम इतने ख़ुदगर्ज़ हो चुके हैं कि अपने मुसलमान भाइयों को पहुँचने वाले नुक़सान से हमें कोई फ़र्क़ ही नहीं पड़ता और ये तक कह देते हैं कि अपना काम बनता ...... में जाये जनता!

हमेशा अपना फाइदा देखना अच्छी बात नहीं है।

दूसरों को भी देख कर चलना चाहिये चाहे वो इल्म का मामला हो, माल का मामला हो या तिजारत हो।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

हज़रते फुज़ैल को एक लड़की से प्यार हुआ

हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ रहिमहुल्लाहु त'आला डाकू थे

आपकी तौबा का सबब ये हुआ कि आप को एक लड़की से प्यार हो गया आप उस के पीछे जा रहे थे, उसके लिए आप एक दीवार पर चढ़े तो एक तिलावत करने वाले को इस आयत की तिलावत करते हुए सुना :

اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ (الحدید:16)

"क्या ईमान वालों को अभी वो वक़्त ना आया के उनके दिल झुक जाएं अल्लाह की याद के लिए"

हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ ने जब ये आयात सुनी तो कैफियत बदल गयी, आपने अर्ज़ की ए मेरे रब वो वक़्त आ चुका है!

आप वहां से वापस हुए और रात वीराने में गुज़ारी

वहां कुछ मुसाफिर आये और फिर उन में से किसी ने कहा के चलो तो कहा गया के नहीं सुबह चलेंगे क्योंकि यहां फुज़ैल नाम का डाकू रहता है।

आप ने ये सुन कर तौबा की और उन्हें भरोसा दिलाया फिर आपने हरम में पनाह ली हत्ता के आपका विसाल हो गया।

(رسالہ قشیریہ، اردو، ص69)

कहते हैं इबरत के लिए कभी कभी एक लफ्ज़ ही काफी होता है और कभी कभी पूरी किताब से कोई असर नहीं पड़ता

मज़कूरा आयत वाक़ई अहले ईमान के दिलो को झिंजोड देने वाली है इस में बंदों को रब की याद दिलाई जा रही है और भटके हुओं को एक

मुहब्बत भरी सदा दी जा रही है अगर हम इस पर ग़ौर करें तो हमारे दिलों की भी कैफ़ियत बदल सकती है।

अब्दे मुस्तफ़ा

जागने से बेहतर तू सोया रहता

हज़रते शैख सादी खुद गुलिस्तान में लिखते हैं कि मुझे बचपन में इबादत का खूब शौक़ था।

एक मर्तबा पूरी रात मैने क़ुरआने पाक की तिलावत में गुज़ार दी। हमारे आस-पास कुछ लोग सोये हुये थे। मैने वालिद साहब से कहा कि ये लोग ऐसे सोये हुये हैं जैसे मर गये हों, इन में से किसी ने कम अज़ कम दो रकाअ़त नमाज़ तक नहीं पढ़ी।

वालिद साहब ने फ़रमाया कि बेटा इस गीबत से बेहतर था कि तू भी सोया रहता।

हज़रते शैख सादी फरमाते हैं कि बचपन में अपने वालिद की ताकीद में ही मेरी अज़मत का राज़ छुपा हुआ है। बचपन में बड़ों की मरम्मत को हम ने बर्दाश्त किया तो अल्लाह त'आला ने दिल की सफाई अता फ़रमा दी।

(ملخصاً: عظمتوں کے پاسبان، ص11)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

वलीमा यानी एक लाख से ज़्यादा

वलीमा यानी जितने की इस्तेताअत हो उतने लोगों को बुला कर खाना खिला देना पर आज के दौर में वलीमा यानी एक लाख से ज़्यादा का खर्च!

आप की ताकत है 10 घर के लोगों को खिलाने की पर 50 से ज़्यादा तो आप के मुहल्ले में ही घर मौजूद है फिर ऊपर से रिश्तेदारों की नज़रे भी आप पर हैं और आप ने सब का खाया है तो अब सब आपसे उम्मीद लगाए बैठे है।

अब ये बताये के अगर 10 घरों में दावत दी जाए तो किन को? और किन को छोड़ दिया जाए?

जिन को आप दावत नही देंगे वो ऐसे नाराज़ होंगे के मुंह नाक सब फुला लेंगे तो अब एक ही रास्ता है के क़र्ज़ लो या लड़की वालों का गला दबाओ पर वलीमा करो हालांकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी रहिमहुल्लाहू त'आला वलीमा के मुताल्लिक़ लिखते है के दावते सुन्नत के लिए किसी ज़्यादा एहतेमाम की ज़रूरत नहीं अगर दो चार लोगों को कुछ मामूली चीज़ अगर्चे पेट भर कर न हो अगर्चे दाल रोटी चटनी रोटी हो या इससे भी कम खिला दें तो सुन्नत अदा हो जाएगी और अगर इसकी भी इस्तेताअत न हो तो कुछ इल्ज़ाम नहीं (यानी ना खिलाये तो कोई हर्ज नही)

(فتاوی امجدیہ، ج4، ص225)

मगर हमें सुन्नत तो अदा करनी नहीं है बल्कि क़र्ज़ ले कर जिस जिस का खाया है उस का क़र्ज़ अदा करना है और दुनिया को दिखाना और राज़ी करना है तो ऐसा वलीमा असल में वलीमा नहीं।

कई ऐसे लोग हैं की उनके पास वलीमा के लिए टेंट (Tent) लगाने के भी पैसे नहीं हैं पर क़र्ज़ ले कर हज़ार की तादाद में लोगों का पेट भरना पड़ता है फिर भी लोगों से यही सुनने को मिलता है के मुझे पापड़ नही मिला, मुझे मछली का पीस नही मिला, मुझे ज़र्दा नहीं मिला और मुझे कोल्ड ड्रिंक (Cold Drink) नसीब नहीं हुई

अल्लाह त'आला हमें सुन्नत पर अमल करने और सादगी की तौफ़ीक़ अता फरमाए

अब्दे मुस्तफा

निकाह आसान कैसे होगा

निकाह को आसान करने के लिये सब से ज़्यादा ज़रूरी है कि 4 शादियों के रिवाज को आम किया जाये।

अब आप कहेंगे कि ये 4 शादी की बात बीच में कहाँ से आ गयी तो ये बीच में आयी नहीं बल्कि हम ने निकाल कर अलग कर दी है जिस की वजह से आज इतनी परेशानियाँ हैं।

खैर चाहते हैं तो पुराने लोगों का तरीक़ा अपनाना होगा मतलब अस्लाफ़ का तरीक़ा। ये जो नारा हम को थमाया गया है कि "हम 2 हमारे 2" या "छोटा परिवार सुखी परिवार" ये झूट है झूट है झूट है। अगर आज 4 शादियों का रिवाज आम होता तो जितनी लड़कियाँ घर बैठे बाल सफ़ेद कर रही हैं उन की तादाद 4 गुना कम होती यानी होती ही नहीं बल्कि तलाक़ शुदा और बेवा औरतें भी घर बैठ कर अपनी मौत का इन्तिज़ार ना कर रही होती।

ये मुआशरा, ये माहौल, ये समाज अगर्चे खुद को तरक़्क़ी याफ्ता या पढ़ा लिखा कहता है लेकिन इनके पास सिवाये लफ्फाज़ी के कोई हल कही है कि जिस से निकाह आसान हो जाये।

अगर निकाह को आसान करना है तो इस पर खास तवज्जो देनी होगी।

कुछ लड़की वाले और लड़के वालों को आगे आना होगा और आपस में मिल कर इसे आम करना होगा ताकि एक तब्दीली लाई जा सके।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

चंगेज़ खान का पोता और हज़रते शेख सादी

चंगेज़ खान के पोते और हलाकू खान के बेटे अबाक़ा खान से जब हज़रते शेख सादी रहिमहुल्लाहू त'आला की मुलाक़ात हुई तो आपने बिना डरे उस से गुफ्तगू की और जब जाने लगे तो उसने कहा के मुझे कुछ नसीहत कीजिये आपने फरमाया : दुनिया से नेकी और बदी आख़िरत में साथ जाएगी, अब तुम्हें इख्तियार हैं के इन दोनों में से तुम्हें क्या साथ ले जाना मंज़ूर है।

अबाक़ा खान ने गुज़ारिश की के इस नसीहत को अशआर का जामा पहना दीजिये

हज़रते शेख ने उसी वक़्त कहा :

شهے که پاس رعیت نگاه میدارد
حلال باد خراجش که مزد چوپانی است
وگرنه راعئ خلق است زہر مارش باد
که ہرچه میخورد از جزیۂ مسلمانی است

"यानी जो बादशाह रिआया की सहीह तौर पर हिफाज़त करता है उसके लिए खिराज इसलिए हलाल है के उसने हिफ़ाज़त की उजरत वुसूल की है और अगर मख़लूक़ की हिफाज़त नहीं करता तो ख़ुदा करे के खिराज उसके लिए ज़हरे क़ातिल हो क्योंकि वो मुसलमानो का जिज़िया (Tax) खा रहा है"

अबाक़ा खान की आंखों में आँसु आ गए और कई दफा पूछा की मैं मख़लूक़ का मुहाफ़िज़ हूँ या नही?

आपने फरमाया की अगर आप मुहाफ़िज़ है तो पहला शेर आप के मुनासिब है वरना दूसरा।

अबाक़ा खान आप की नसीहत से खुश हुआ और आप को एज़ाज़ के साथ रुखसत किया

इस तरीके से एक आम आदमी को नसीहत करना मुश्किल है मगर शेख सादी ने मंगोल बादशाह के सामने पूरी बेबाकी से हक की आवाज़ को बुलंद किया।

ज़माने को ज़रूरत है जालिमों की आँख में आँख डाल कर बे खौफ बोलने वाले लोगों की।

अल्लाह त'आला हमें भी इन मुबारक हस्तियों के सदके हक़ बोलने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

(عظمتوں کے پاسبان، ص13،14)

अब्दे मुस्तफा

एक बीवी से फ़ाइदा क्या हुआ?

मर्द निकाह क्यों करता है? मक़्सद क्या होता है?

पहला ये कि औरत के ज़रिये औलाद हासिल हो।

दूसरा ये कि गुनाहों से बच सके यानी बद-निगाही, मुश्तज़नी या ज़िना के क़रीब ना जाये पर एक बीवी में ये दोनों मक़्सद पूरे नहीं होते!

एक बीवी से ज़्यादा औलाद मुम्किन नहीं, ज़्यादा औलाद के लिये ज़्यादा औरतों से निकाह करना ज़रूरी है फिर एक बीवी से मक़्सद कहाँ पूरा हुआ?

दूसरा है गुनाहों से बचना तो क्या ये भी एक बीवी से हर किसी के लिये मुम्किन है?

हदीस में हुक्म है कि जब किसी औरत पर निगाह पड़े और वो अच्छी लगे (यानी उसकी ख्वाहिश हो) तो अपनी बीवी के पास आये और अपनी ख्वाहिश को पूरी कर ले लेकिन अगर उसकी बीवी हैज़ की हालत में हो तो फिर उस के पास कौन सा रास्ता (ऑप्शन) है?

फिर गुनाहों से बचना जो मक़्सूद था वो कहाँ पूरा हुआ?

सिर्फ हैज़ की बात नहीं है, औरतों के कई मसाइल हैं, मस्लन एक बीवी है और घर का काम है, अय्यामे हमल (Pregnancy) है, थकान है, मिजाज (मूड) है, तबियत है, बच्चे हैं और फिर हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा वग़ैरह अपनी जगह हैं तो हर मर्द के लिये कोई अक़्लमंद एक बीवी को काफ़ी क़रार नहीं दे सकता और मर्द को दूसरी शादी से रोकना अस्ल में उसे ज़हनी और जिस्मानी तौर पर तकलीफ़ पहुँचाना और गुनाहों की तरफ ढकेलने के बराबर है।

अगर आप निकाह के मक़्सद को पाना चाहते हैं तो एक से ज़्यादा शादियाँ ज़रूरी हैं। औलाद भी ज़्यादा होंगी, मियाँ बीवी खुशहाल भी होंगे और दुनिया व आखिरत में कामयाब भी होंगे।

पहले नमाज फिर तावीज़

हज़रत अल्लामा अबुल बरकात सय्यद अहमद क़ादरी रहिमहुल्लाहू त'आला के पास तावीज़ लेने वालों की भीड लगी रहती थी।

आप रहिमहुल्लाहू तआला पहले पूछते नमाज पढते हो या नहीं?

तावीज़ का तलबगार कहता के नहीं पढ़ता या कभी कभार पढता हूं तो फ़रमाते के तुम नमाज नहीं पढते तो अल्लाह तआला तुमसे नाराज है तो फिर मेरा तावीज़ वहां क्या काम करेगा?

इस अंदाज से आप लोगों को नमाज की तरगीब देते।

(عظمتوں کے پاسبان، ص56)

ऐसे थे हमारे अकाबिरिन जो लोगों को फराइजो वाजिबात की अहमियत हर मौक़े पर बताया करते थे।

जो चीजें मुस्तहब हैं उनका इन्कार नहीं पर पेहले फराइजो वाजिबात हैं जिनका तर्क हजारो मुस्तहब कामो के तर्क से बुरा है।

आज हमारे दरमियान ऐसा भी देखने को मिलता है के अगर किसी घर मे मौत हो जाये और फिर घर वाले चौथे, चालिसवैं वगैराह की मेहफिल और दावत ना करें अगर्चे वो सुन्नी है तो लोग उन्हैं इस नज़र से देखेंगे के मानो कोई जुर्म कर दिया हो वहीं अगर वो पूरे घर वाले नमाज ना पढ़ते हो तो फिर लोगों के लिये कोई बडी बात नहीं होगी।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

औरत टेढ़ी पसली

मर्दो को ये बात हर वक़्त याद रखनी चाहिए कि औरत टेढ़ी पसली से बनाई गई है जैसा कि मुस्लिम शरीफ की हदीस में इरशाद हुआ है

औरतों से कभी ये तवक़्क़ो नही रखनी चाहिए कि वो मुकम्मल दुरुस्त हो जाएगी और अगर कोई उसे हर तरह से सीधा करने की कोशिश करेगा तो उसे खो बैठेगा यानी तलाक़!

इसका ये मतलब नहीं कि आप औरत की इस्लाह न करें

इस्लाह की पूरी कोशिश करें लेकिन नरमी और मुहब्बत के साथ

औरतें बहुत ज़्यादा जज़्बाती (Sensitive) होती है, अगर कोई मिठी मिठी बातों से चाहे तो उन्हें फौरन राज़ी कर लें लेकिन अगर आप टेढ़े पन पर आएंगे तो याद रखिये की वो पहले से...

सख्ती भी करनी चाहिए लेकिन शरई मुआमलात में जैसे नमाज़ न पढ़े, पर्दा ना करे या कोई गैर शरई काम करे पर इस में भी पहले नरमी की कोशिश करें और न माने तो थोड़ी सख्ती दिखाए फिर भी ना माने तो थोड़ा बहुत मार सकते हैं पर आज कल इन बातों की वजह से किसी ने सख्ती की हो ऐसा जल्दी सुनने में नहीं आता बल्कि अकसर लड़ाई झगड़े ऐसी बातों की वजह से होते है जिन्हें एक मर्द चाहे तो घर में किसी को पता चले बगैर हाल कर ले।

औरतें जैसी है उनसे उसी तरह फायदा उठाएं

उनकी ग़लत आदतों को नज़र अंदाज़ करें और अच्छाईयों को देखें इसी में फायदा है

अब्दे मुस्तफ़ा

लड़की वालों से एक सवाल

लड़की वाले मज़्लूम कहलाते हैं कि उन से जहेज़ और नक़्दी का मुतालिबा किया जाया है पर आज हम लड़की वालों से एक ऐसा सवाल पूछने जा रहे हैं कि उन की पोल खुल जायेगी, दीनदारी ज़ाहिर हो जायेगी और सब को मालूम हो जायेगा कि कौन दूध का धुला हुआ है।

माफ़ कीजियेगा हमारे अलफाज़ अगर्चे दुरुस्त ना हों पर हक़ीक़त तो हक़ीक़त है।

सवाल ये है कि आप की लड़की के लिये आप के सामने दो रास्ते हैं :

पहला एक ऐसा लड़का जो दीनदार है, पढ़ा लिखा है, बीवी के हुक़ूक़ जानता है, आप से नक़्दी नहीं लेगा, जहेज़ नहीं लेगा और सुन्नत के मुताबिक़ निकाह करेगा।

दूसरा एक ऐसा लड़का है जो नमाज़ नहीं पढ़ता, दाढ़ी नहीं रखता, दीनदार नहीं, बीवी के हुक़ूक़ का पता नहीं, ऐश मौज की ज़िंदगी जीने वाला और आप से 1 लाख+ लेगा, जहेज़ भी लेगा और बाजे गाजे के साथ आप की बैंड बजा कर शादी करेगा।

अब आप बतायें कि लड़की किस को देंगे?

रुकिये रुकिये जनाब इतनी आसानी से आप जवाब नहीं दे सकते।

जवाब देने से पहले ये जान लीजिये कि पहला लड़का शादी शुदा है और दूसरी शादी करना चाहता है यानी एक से ज़्यादा बीवियाँ रख कर अस्लाफ़ के तरीक़े पर चलना चाहता है और दूसरा लड़का कुँवारा है तो अब आप जवाब दे सकते हैं कि लड़की किस को देंगे?

इस का जवाब हमें या किसी को देने की ज़रूरत नहीं बस अपने पास रखिये और जान लीजिये कि आपको अच्छा लड़का नहीं चाहिये बल्कि मुआशरा जिसे अच्छा समझता है वो चाहिये।

आप किसी शादी शुदा को कुँवारी बेटी दे देंगे तो आप की नाक कट जायेगी लेकिन अगर एक फासिक़ को 2 लाख की रिश्वत दे कर देंगे तो सर बुलंद रहेगा।

आप अपना सर बुलंद रखिये, अपनी बेटी की आखिरत के बदले में ये सौदा शायद आपको बहुत महँगा पड़ गया पर हाये रे गफलत।

अब ये आप किस मुँह से कहेंगे कि मुझ पर लड़के वालों ने ज़ुल्म किया है? आप ने तो उस के कुँवारे पन (Virginity) को खरीदा है तो आप कैसे मज़्लूम हुये?

खैर जाने दीजिये हम बहुत ज़्यादा कह गये।

हमारी बातों में आकर कुछ ऐसा ना कीजिये कि लोगों के दरमियान आप की साख तबाह हो जाये बल्कि वही कीजिये जिस से लोग राज़ी हैं क्योंकि वो आप का घर चला देते हैं और आपके लिये आखिरत में सिफारिश करेंगे?

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

चलिए देख कर आते हैं दूल्हन को

शादी कर के जब कोई नई दुल्हन घर लाता है तो एक भीड़ उसे देखने के लिए पहुच जाती है के चलो देखते है कि दुल्हन कैसी है

अरे जनाब! जिसकी दुल्हन वो देखे, आप को क्या पड़ी है?

देखने वालों के साथ साथ दिखाने वालों को भी खूब शौक़ है ताकि उनकी तारीफ हो

दुल्हन एक कमरे में है वहां मुहल्ले के लोग, दूल्हे के दोस्त फिर अगर दूल्हे के भाई है तो उस के दोस्त सब भाभी भाभी करते हुए तोहफा और लिफाफा लिए अपना चहेरा शरीफ उठाए चले आते है और फिर बाते होती है हत्ता के हंसी मज़ाक भी आम बात हो गयी है।

कुछ ज़्यादा पढ़े लिखे लोग ये करते है के दुल्हन और दूल्हे को खुले आम सब के सामने एक बड़े हॉल में दो बड़ी कुर्सियां मंगवा कर बिठा देते है ताकि देखने वाले जी भर के दीदार करें, सेल्फी ले और वीडियोस बनाए

ऐसे लोगों के अंदर या तो गैरत सो गई है या ये सब रोकने की हिम्मत नही रखते।

ज़रूरी है कि हम इस नाजायज़ तरीके पर रोक लगाएं और लोगों को चाहे बुरा लगे या भला अपनी दुल्हन को अपनी दुल्हन की तरह ही रखे न के बाजार में बिकने वाली किसी चीज़ की तरह के जो आता है देख कर चला जाता है।

अब्दे मुस्तफ़ा

चार बीवियाँ और हुक़ूक़

जब भी हम चार बीवियाँ रखने की बात करते हैं तो सबसे ज़्यादा जो लफ्ज़ सुनने को मिलता है वो है "हुक़ूक़" (यानी औरत का हक़, उसके राइट्स)

हम भी यही कहते हैं कि औरत के हुक़ूक़ अदा करना ज़रूरी है पर मर्द के हुक़ूक़ (Rights) का क्या? क्या उनका कोई हक़ नहीं है? क्या वो सिर्फ बीवी के मना करने से दूसरी शादी करने से रुक जायें?

औरत के हुक़ूक़ की दो तरह की फेहरिस्त (List) है, एक वो जो शरीअ़त के तरफ़ से है और एक वो जो मुआशरे ने बना रखी है।

मुआशरे की बनायी गयी लिस्ट नाजाइज़ ख्वाहिशात और फुज़ूल खर्चों पर मुश्तमिल है और यही वजह है कि अब "एक को संभालना मुश्किल पड़ रहा है"

अब जो फेहरिस्त शरीअ़त ने बनायी है उसके मुताबिक़ चार बीवीयों के साथ चार बान्दियों का खर्चा भी आराम से उठाया जा सकता है। हर शख्स नहीं पर कई लोग आसानी से चार बीवीयों के हुक़ूक़ अदा कर सकते हैं। अभी तो औरतों के मुताबिक़ कोई मर्द ही नहीं बचा जो 4 बीवियों के हुक़ूक़ अदा कर सके और ये एक बड़ा वाला और सफेद झूट है।

हम कहें कि शरीअ़त की बनायी हुई फेहरिस्त के मुताबिक़ बीवी के बीमार पड़ने पर उसका इलाज करवाना भी वाजिब नहीं तो कई लोगों को हज़म नहीं होगा।

ये अलग बात है के अख्लाक़ी तौर पर इलाज करवाना चाहिये पर मक़्सद ये बताना है कि ज़रूरी क्या है उसे समझें।

बस हुक़ूक़ हुक़ूक़ की रट लगाकर अपनी मर्ज़ी ना चलायें बल्कि ये समझें कि शौहर पर वाजिब क्या है और वो उससे ज़्यादा बतौरे एहसान क्या क्या मुझे दे रहा है।

जिसके पास हज़ारों हैं वो भी चार बीवी का नाम नहीं ले सकता और जिसके पास लाखों है उसके अपने बड़े मसाइल हैं तो फिर क्या हम भी औरतों के इसी झूट को तस्लीम कर लें कि अब हुक़ूक़ अदा नहीं हो सकते या फिर ये देखें के इसके पीछे हक़ीक़त क्या है?

हुक़ूक़ का मसअला बड़ा है लेकिन इतना बड़ा नहीं जितना हद से बढ़ कर बना दिया गया है।

अ़ब्दे मुस्तफा

ये बंदा दो आलम से खफा मेरे लिये है

किसी से प्यार हो तो अल्लाह के लिये और किसी से नफरत हो तो भी अल्लाह के लिये |

ये दीन नहीं के हर एक से प्यार हो जाये या हर एक से नफरत की जाये |

मुहद्दीस ए आज़म पाकिस्तान, अल्लामा सरदार अहमद क़ादरी रहिमहुल्लाहु त'आला से एक शिया अफसर मिलने के लिये आया |

उसने जब हाथ मिलाना चाहा तो आप ने ये कहते हुए हाथ पीछे कर लिया के मेरे दिल मे खुल्फा ए राशिदीन और सहाबा किराम की शमा रोशन है और मुझे खतरा है के इस शमा की लौ मांद ना पड जाये |

(عظمتوں کے پاسبان)

इसी तरह एक बार सफर में एक मशहूर खतीब से सामना हो गया तो वो मुसाफाह करने के लिये आगे बढा |

आप ने पहले पुछा के देवबंदीयों की गुस्ताखी भरी इबारात के बारे में आप की क्या राय है?

उस ने कहा के में मुनाज़रा करने के लिये नहीं बस मुलाकात के लिये आया हू |

आप ने फरमाया जब तक इन इबारात का तस्फिया नहीं हो जाता, में मुलाक़ात नहीं कर सकता |

(عظمتوں کے پاسبان)

ये होता है दीन, जी यही है दीन; जो रो रो कर आप को इत्तेहाद की दावत देते हैं उन से दूर रहें, उन के मकरो फरेब से बचें| वो आपको तौहीद नहीं कुफ्र की तरफ ले जा रहें है | तौहीद तो ये है के :

तौहीद तो ये है के खुदा हश्र मे कह दे
ये बंदा दो आलम से खफा मेरे लिये है

अब्दे मुस्तफा

हम 4 शादी पर कब तक लिखेंगे?

हम उस वक़्त तक इस टॉपिक पर लिखेंगे जब तक ये कॉमन ना हो जाये।

यूँ समझिये कि एक अर्से पहले जब कहीं किसी लड़की के साथ कुछ गलत होता था तो सुन कर बड़ा अजीब लगता था, लोग हर तरफ़ बातें करते हुये नज़र आते थे पर जब औरतों ने कपड़े कम कर दिये, हम ने निकाह मुश्किल कर दिया और साथ में पढ़ने लिखने, जॉब करने का सिस्टम आम हुआ तो फिर ये केस (Cases) इतने बढ़ गये कि अब आये दिन न्यूज़ नें ऐसे कई केस (Cases) के बारे में दिखाया जाता है पर अब सुन कर वो महसूस नहीं होता जो पहले होता था क्योंकि अब ये बहुत ज़्यादा आम हो गया बल्कि रज़ामन्दी के साथ तो इसे गलत भी नहीं समझते कुछ लोग।

इसी तरह 4 शादी वाला मुआमला है। एक अर्से से इस पर ज़्यादा बात नहीं हुई, ज़्यादा लिखा नहीं गया और अ़मल भी नहीं तो अब अचानक ये लोगों को अजीब लग रहा है जब कि ये सहीह है।

अब जब हम इस पर लगातार काम करेंगे तो कुछ लोग ज़रूर समझेंगे और आने वाली नस्लों में ज़्यादा तब्दीली आयेगी।

अगर एक लड़की अपने वालिद की 4 बीवियाँ देखे, अपने भाई की एक से ज़्यादा बीवियाँ देखे और रिश्तेदारों में भी ऐसा ही नज़र आये तो उसे भी बड़े हो कर किसी की दूसरी या तीसरी बीवी बनने में बुरा नहीं लगेगा बस ज़रूरी है कि उसी माहौल में बड़ा किया जाये।

हम ये माहौल बनाना चाहते हैं। इस के लिये हर जगह से कुछ लोग मिल कर आपस में ही आगाज़ करें तो काम हो सकता है।

अल्लाह त'आला हमें इस सुन्नत को फिर से ज़िन्दा करने की तौफ़ीक़ दे।

OUR OTHER PAMPHLETS

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION